भारत का उभरता जनसांख्यिकीय विभाजन: आंध्र प्रदेश की प्रजनन-समर्थक (Pro-Natal) नीति से सबक

UPSC प्रासंगिकता

IAS-PCS Institute

- **प्रारंभिक परीक्षा:** कुल प्रजनन दर (TFR), राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS), प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन क्षमता (Replacement level fertility)।
- **मुख्य परीक्षा:** GS-1: जनसंख्या और उससे जुड़े मुद्दे; GS-3: जनसांख्यिकीय लाभांश, श्रम बल और आर्थिक विकास।

चर्चा में क्यों?

आंध्र प्रदेश सरकार ने हाल ही में एक **मसौदा जनसंख्या प्रबंधन नीति** (Draft Population Management Policy) पेश की है, जिसका उद्देश्य कुल प्रजनन दर (TFR) को 1.5 से बढ़ाकर प्रतिस्थापन स्तर **2.1** तक लाना है। मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू द्वारा घोषित इस नीति में तीसरा बच्चा पैदा करने वाले परिवारों के लिए वित्तीय प्रोत्साहन का प्रस्ताव है, जिसमें शामिल हैं:

- प्रसव के समय ₹25,000 की सहायता।
- पांच वर्षों तक ₹1,000 की मासिक सहायता।
- 18 वर्ष तक बच्चे के लिए मुफ्त शिक्षा। यह पहल भारत के जनसंख्या विमर्श में एक बड़े बदलाव को दर्शाती है—जनसंख्या नियंत्रण से हटकर **जनसंख्या स्थिरीकरण** की ओर, विशेष रूप से कम प्रजनन दर वाले राज्यों में।

Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

पृष्ठभूमि: भारत की बदलती जनसंख्या गतिशीलता

दशकों तक, उच्च प्रजनन दर और तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण भारत ने जनसंख्या नियंत्रण नीतियों पर ध्यान केंद्रित किया। हालाँकि, हाल के जनसांख्यिकीय आंकड़े देश भर में प्रजनन दर में महत्वपूर्ण गिरावट दर्शाते हैं। **राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण** (NFHS-5) के अनुसार:

- भारत की कुल प्रजनन दर (TFR) घटकर लगभग **2.0** हो गई है।
- स्थिर जनसंख्या के लिए आवश्यक प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन क्षमता **2.1** है। यह इंगित करता है कि भारत जनसंख्या स्थिरीकरण के करीब पहुंच रहा है। हालाँकि, आज मुख्य मुद्दा जनसंख्या का आकार नहीं, बल्कि राज्यों में असमान जनसांख्यिकीय संक्रमण है, जिससे **जनसांख्यिकीय विचलन** (Demographic Divergence) पैदा हो रहा है।

कुल प्रजनन दर (TFR) को समझना

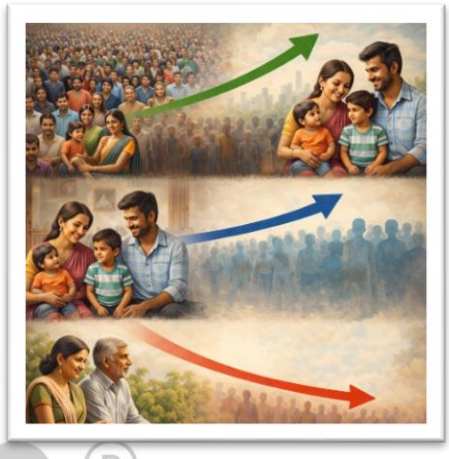

कुल प्रजनन दर (TFR) से तात्पर्य उन बच्चों की औसत संख्या से है जो एक महिला अपने प्रजनन वर्षों के दौरान पैदा कर सकती है।

- TFR > 2.1 ⟶ जनसंख्या बढ़ती है।
- TFR = 2.1 ⟶ जनसंख्या स्थिर हो जाती है।
- TFR < 2.1 ⟶ लंबे समय में जनसंख्या घटती है।

जापान, इटली और दक्षिण कोरिया जैसे कई विकसित देश वर्तमान में बहुत कम प्रजनन दर के कारण गंभीर जनसांख्यिकीय बुढ़ापे (ageing) और श्रम की कमी का सामना कर रहे हैं। भारत के कुछ क्षेत्र धीरे-धीरे इसी तरह की चुनौती की ओर बढ़ रहे हैं।

भारत में जनसांख्यिकीय विचलन (Demographic Divergence)

भारत आज दो विपरीत जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं का गवाह बन रहा है।

1. कम प्रजनन दर और वृद्ध होते राज्य कई दक्षिणी और आर्थिक रूप से उन्नत राज्यों ने जनसंख्या स्थिरीकरण के चरण को पार कर लिया है।

- **उदाहरण:** केरल (TFR ~1.6), तमिलनाडु (~1.4), आंध्र प्रदेश (~1.5), कर्नाटक (~1.7)।
- **मुख्य विशेषताएं:** उच्च महिला साक्षरता, अधिक शहरीकरण, बेहतर स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच।
- **उभरती चुनौती:** वृद्ध होती आबादी, सिकुड़ता श्रम बल, सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों पर दबाव। आंध्र प्रदेश द्वारा प्रस्तावित नीति दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय असंतुलन को रोकने का एक प्रयास है।

2. उच्च प्रजनन दर और युवा जनसंख्या वाले राज्य कई उत्तरी और मध्य राज्यों में अभी भी प्रजनन दर अपेक्षाकृत उच्च है।

- **उदाहरण:** बिहार (~3.0), उत्तर प्रदेश (~2.4), झारखंड (~2.3)।
- **मुख्य विशेषताएं:** कम महिला साक्षरता, बाल विवाह, स्वास्थ्य सेवा और गर्भनिरोधक तक कम पहुंच।
- **मुख्य चुनौती:** संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव, शिक्षा, रोजगार और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता।

IAS PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी

प्रजनन दर में गिरावट के पीछे के कारक

भारत के कई राज्यों में गिरती प्रजनन दर के पीछे कई संरचनात्मक बदलाव हैं:

- **महिला शिक्षा का उदय:** शिक्षा प्रजनन व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है। उच्च साक्षरता से विवाह में देरी और छोटे परिवार होते हैं।
- **शहरीकरण और जीवनशैली में बदलाव:** शहरी जीवन बच्चों के पालन-पोषण की लागत (शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास) को बढ़ा देता है, जिससे परिवार कम बच्चों को प्राथमिकता देते हैं।
- **श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी:** आर्थिक भागीदारी करियर को प्राथमिकता देने और प्रसव में देरी को प्रोत्साहित करती है।
- **बेहतर स्वास्थ्य सेवा और परिवार नियोजन:** गर्भनिरोधक और मातृ स्वास्थ्य देखभाल तक बेहतर पहुंच।

जनसांख्यिकीय विचलन के निहितार्थ (Implications)

1. **श्रम प्रवासन (Labour Migration):** कम प्रजनन दर वाले राज्य तेजी से उच्च प्रजनन दर वाले राज्यों के श्रमिकों पर निर्भर हो रहे हैं। (जैसे: बिहार और यूपी से तमिलनाडु और केरल की ओर प्रवासन)।
2. **आर्थिक असंतुलन:** कम प्रजनन वाले राज्यों को श्रम की कमी और धीमी आर्थिक वृद्धि का सामना करना पड़ सकता है, जबकि उच्च प्रजनन वाले राज्यों पर शिक्षा और स्वास्थ्य प्रणालियों का दबाव बढ़ सकता है।
3. **राजनीतिक चिंताएं:** जनसंख्या अंतर भविष्य के **परिसीमन (Delimitation)** के बाद संसदीय प्रतिनिधित्व को प्रभावित कर सकता है। जनसंख्या वृद्धि को सफलतापूर्वक कम करने वाले राज्यों को डर है कि वे उच्च प्रजनन वाले राज्यों की तुलना में प्रतिनिधित्व खो देंगे।

IAS PCS Institute
Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

क्या भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश जोखिम में है?

भारत वर्तमान में 'जनसंख्या लाभांश' (Demographic Dividend) का आनंद ले रहा है, जिसका अर्थ है कि जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कार्यशील आयु का है। हालाँकि, यह लाभ तभी विकास में बदल सकता है जब:

- युवाओं को शिक्षा और कौशल मिले।
- पर्याप्त रोजगार के अवसर पैदा हों। अन्यथा, यह लाभांश एक 'जनसांख्यिकीय देनदारी' (Demographic Liability) बन सकता है, जिससे बेरोजगारी और सामाजिक अशांति पैदा हो सकती है।

आगे की राह

भारत को एक संतुलित और क्षेत्र-विशिष्ट जनसंख्या रणनीति की आवश्यकता है।

1. **राज्य-विशिष्ट जनसंख्या नीतियां:** एक समान राष्ट्रीय नीति के बजाय, कम प्रजनन वाले राज्य परिवार सहायता उपायों को प्रोत्साहित कर सकते हैं, जबकि उच्च प्रजनन वाले राज्यों को शिक्षा और स्वास्थ्य पहुंच पर ध्यान देना चाहिए।
2. **मानव पूंजी में निवेश:** शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास में सुधार करके आबादी को उत्पादक कार्यबल में बदलना।
3. **महिला सशक्तिकरण:** श्रम बल में महिलाओं की उच्च भागीदारी और मातृत्व सहायता पर ध्यान देना।
4. **आंतरिक प्रवासन का प्रबंधन:** सुरक्षित और उत्पादक श्रम गतिशीलता के लिए नीतियां बनाना।

निष्कर्ष

भारत की जनसंख्या बहस अब "बहुत अधिक लोगों" के बारे में नहीं है, बल्कि राज्यों में असमान जनसांख्यिकीय संक्रमण के बारे में है। आंध्र प्रदेश की पहल इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे कुछ क्षेत्र गिरती प्रजनन दर और वृद्ध होती आबादी की चुनौतियों का सामना करने लगे हैं।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा अभ्यास प्रश्न

Q1. कुल प्रजनन दर (TFR) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कुल प्रजनन दर से तात्पर्य उन बच्चों की औसत संख्या से है जो एक महिला अपने प्रजनन वर्षों के दौरान पैदा कर सकती है।
2. 2.1 के TFR को जनसंख्या स्थिरता के लिए आवश्यक प्रजनन क्षमता का प्रतिस्थापन स्तर माना जाता है।
3. प्रतिस्थापन स्तर से नीचे का TFR अंततः जनसंख्या के बुढ़ापे और श्रम की कमी का कारण बन सकता है। उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

A. केवल 1 और 2 B. केवल 2 और 3 C. केवल 1 और 3 D. 1, 2 और 3

उत्तर: D

Q2. भारत में जनसंख्या प्रवृत्तियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के अनुसार, भारत की कुल प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर के आसपास गिर गई है।
2. केरल और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी राज्यों में प्रजनन दर राष्ट्रीय औसत से कम है।
3. बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में दक्षिणी राज्यों की तुलना में प्रजनन दर अपेक्षाकृत अधिक है। उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

IAS-PCS Institute

A. केवल 1 B. केवल 1 और 2 C. केवल 2 और 3 D. 1, 2 और 3

उत्तर: D

UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: "भारत जनसांख्यिकीय विचलन का अनुभव कर रहा है, जिसमें कुछ राज्यों को गिरती प्रजनन दर का सामना करना पड़ रहा है जबकि अन्य में उच्च जनसंख्या वृद्धि जारी है।" इस प्रवृत्ति के कारणों और निहितार्थों की चर्चा कीजिए। भारत के उभरते जनसांख्यिकीय विभाजन को प्रबंधित करने के लिए नीतिगत उपायों का भी सुझाव दीजिए। (250 शब्द)

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806